बुलबुल

मित्रता की कहानी

चीन के सम्राट का महल बहुत ही सुंदर था. संसार भर से लोग उस महल को देखने आते थे.

महल के कमरे बहुत बड़े थे. खिड़कियाँ पर बढ़िया रेशम के परदे लगे थे. दुनिया के सबसे कुशल कारीगरों ने महल के लिए कालीन बनाये थे. फर्नीचर भी उत्तम प्रकार का था.

महल के बगीचों में एक सौ माली काम करते थे. वह हज़ारों पौधों का ध्यान रखते थे. बगीचों में उन्होंने अनूठे पौधे लगा रखे थे.

इन सुंदर वस्तुओं को देखने के लिए कई लोग आते थे. जो वस्तुएँ उन्होंने कभी देखी न थीं उन्हें वह देखना चाहते थे. वह महल और बगीचों का चक्कर लगाते थे और हर वस्तु को देख कर दंग रह जाते थे. महल का भ्रमण समाप्त होने पर भी लोग और घूमना चाहते थे.

"हमारे भ्रमण को समाप्त मत करो," वह कहते.

मुख्य माली ने उनकी बात सुनी. वह जानता था कि महलों से ज़्यादा सुंदर जगह कहाँ थी. वह जगह सारे बगीचों से भी अधिक सुंदर थी.

"मैं आप लोगों को चीन की सबसे सुंदर जगह दिखा सकता हूँ," उसने कहा.

वह लोगों को एक ऐसे जंगल में ले गया जहाँ साधारण से पेड़ लगे थे. उस जंगल में वह उन्हें एक खास पेड़ के पास ले आया. उसने पेड़ की डाल पर बैठे एक पक्षी की ओर संकेत किया. लोगों ने ऊपर देखा.

"इसमें सुंदरता वाली क्या बात है?" लोगों ने पूछा. "तुम हमें यहां तक इसके लिये लाये थे? यह साधारण-सा भूरे रंग का पक्षी दिखाने के लिए?"

"यह साधारण पक्षी नहीं है," माली ने कहा. "यह बुलबुल है. बस थोड़ी प्रतीक्षा करें."

बुलबुल ने मुँह खोला. वह गाने लगी. उसकी आवाज़ बहुत मीठी थी. बुलबुल का गीत सुन कर लोगों को बहुत प्रसन्नता हुई.
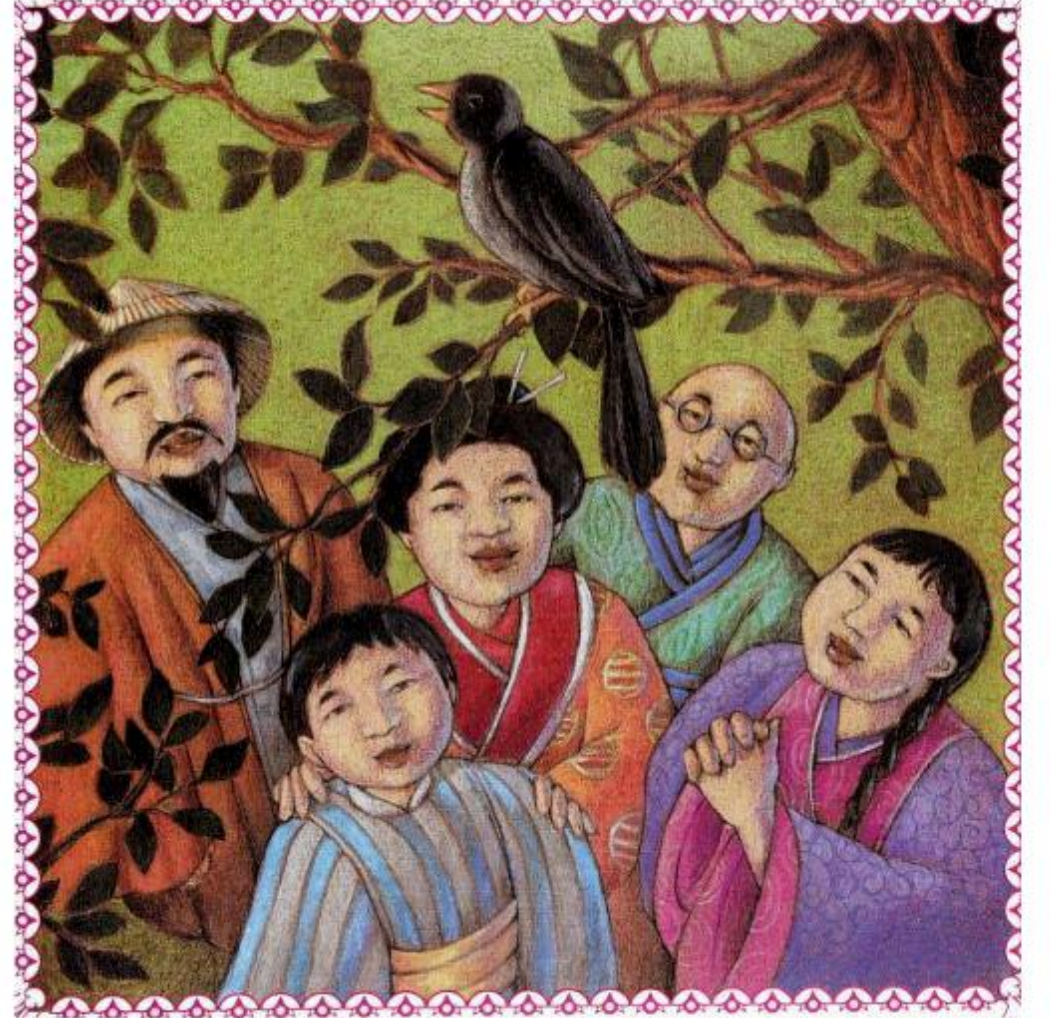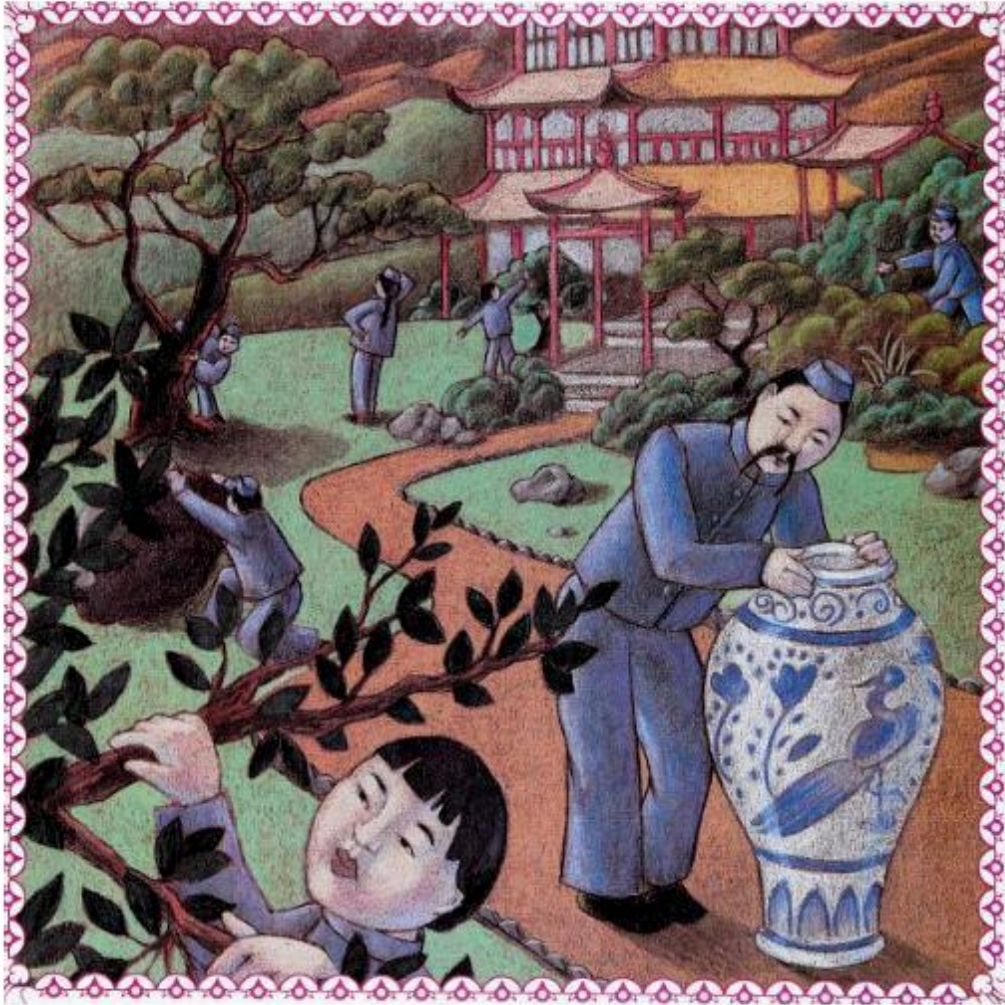
बुलबुल के गाने की याद मन में संजोये सब लौट आये. चीन की सबसे सुंदर जीव के रूप में वह बुलबुल प्रसिद्ध हो गई. सब ने उस अद्भुत पक्षी के बारे में सुना.

सब ने सुना, सिवाय सम्राट के.

सम्राट बहुत बूढ़े थे. वह सदा महल के भीतर ही रहते थे. उन्हें अपना महल प्रिय था. अपने बगीचों का दृश्य उन्हें अच्छा लगता था. लेकिन कोई भी बात उन्हें खुशी न दे पाती थी.

एक दिन सम्राट को जापान के सम्राट का एक पत्र मिला.

“हमने आपकी अद्भुत बुलबुल के बारे में सुना है,” जापान के सम्राट ने लिखा था. “कुछ लोगों का कहना है कि वह संसार की सबसे सुंदर जीव है. हम उस निराले पक्षी को देखना चाहते हैं. हम दो दिन बाद आप से मिलने चीन आयेंगे.”

सम्राट को हैरानी हुई. उन्होंने अपने मुख्यमंत्री को बुलाया.

“जापान के सम्राट हमारी बुलबुल देखने आ रहे हैं,” उन्होंने कहा. “वह समझते हैं कि हमारे पास एक अद्भुत बुलबुल है. लेकिन हमारे पास कोई बुलबुल नहीं है. उनके आने पर हम उन्हें क्या दिखायेंगे?”

सम्राट ने अपने सारे सैनिकों को बुलाया.

“उस सुंदर बुलबुल को ढूँढ कर लाओ,” सम्राट ने कहा.

सैनिकों ने सम्राट के आदेश का पालन करने का प्रयास किया. उन्होंने महल के हर कोने की तलाशी ली. लेकिन वह पक्षी को न ढूंढ पाये.

कोई न जानता था कि अब उसे कहाँ ढूंढा जाये.

कोई नहीं, सिवाय मुख्य माली के. वह जानता था कि बुलबुल कहाँ मिलेगी. वह सब को बुलबुल के पेड़ के पास ले गया.

सैनिक झटपट जंगल से वापस आये. वह पक्षी को सम्राट के पास सिंहासन कक्ष में लाये.

"तो," सम्राट ने कहा, "इस बुलबुल की क्या विशेषता है?"

"हम नहीं जानते," वह बोले, "यह एक साधारण पक्षी है और हमें यह एक साधारण पेड़ पर मिला."

"इस पक्षी को अपनी आँखों से ओझल न होने देना," सम्राट ने आदेश दिया.

सम्राट अपने मेहमान का स्वागत करने चल पड़े.

"हम बहुत दूर से आये हैं," जापान के सम्राट ने कहा. "और हम उस निराले पक्षी को देखने के लिये उत्सुक हैं."

सम्राट अपने मेहमान को सिंहासन कक्ष में ले गये.

"क्या यही है प्रसिद्ध बुलबुल?" जापान के सम्राट ने पूछा. "क्या सारे चीन में सबसे सुंदर जीव यही है? हमें तो यह एक साधारण पक्षी दिखाई दे रहा है."

जापान के सम्राट निराश लग रहे थे. चीन के सम्राट को अपने मेहमान की बातें अच्छी न लग रही थीं.

सिंहासन कक्ष में खामोशी थी.

तभी बुलबुल ने अपना मुंह खोला. उसने सबसे सुंदर गीत गाया, ऐसा गीत जो अबतक किसी ने सुना न था.

गीत सुनने के लिये जापान के सम्राट ने अपनी आँखें बंद कर लीं. उन्होंने गहरी सांस ली और मुस्कराने लगे.

चीन के सम्राट ने भी अपनी आँखें बंद कर लीं और सुनने लगे. उन्हें एक ऐसी अनुभूति हुई जैसी दीर्घकाल से न हुई थी. उन्हें खुशी महसूस हुई.

जापान के सम्राट कई और दिन चीन में रुके. वह घंटों बुलबुल का गाना सुनते. चीन के सम्राट भी उनके साथ सुनते. बुलबुल का गाना बार-बार सुन कर भी उनका मन न भरता था.

कई दिनों के बाद जापान के सम्राट को चीन से वापस जाना पड़ा.

“इस शानदार पक्षी का गीत सुनने का आपने हमें अवसर दिया, आपका धन्यवाद,” उन्होंने कहा. “अपना आभार व्यक्त करने का हमें कोई उपाय करना होगा.”

बुलबुल का गीत सारे महल में सुनाई देता. उसका गाना सुन कर वृद्ध सम्राट बहुत प्रसन्नता महसूस करते.

उसे सुनने और देखने के लिये संसार भर से लोग आने लगे.

कोई भी महल या बगीचे देखना न चाहता था. वह सिर्फ बुलबुल के लिये आते थे.

“बुलबुल का गीत कितना सुंदर है,” लोग कहते. “पर दुःख की बात है कि यह कितनी साधारण दिखती है.”

यह बातें सुनकर सम्राट परेशान हो जाते. बुलबुल का गाना उन्हें खुशी देता था. वह इतने प्रसन्न थे जितने पहले कभी न हुए थे.

“बुलबुल के संबंध में हम कोई अपशब्द नहीं सुनेंगे,” उन्होंने कहा.

सम्राट ने आदेश दिया कि बुलबुल के लिये सोने का पिंजरा बनाया जाये. बुलबुल के पहनने के लिये गहने और रिबन बनाये जायें.

“अब इसके रहने के लिये एक सुंदर जगह होगी. वह सुंदर दिखाई देगी. लेकिन महत्व तो इसके मधुर गाने का ही है.” उन्होंने कहा.

“यह बुलबुल उतनी ही सुंदर दिखती है जितना सुंदर गाती है,” सब दर्शक कहते.

बुलबुल अपने पिंजरे में रहती, अपने सुंदर गहने और रिबन पहनती. अपने गीत गाती. लोगों को खुशियाँ देती. उसे देखना और सुनना सब को अच्छा लगता.

लेकिन सम्राट को लगता कि बुलबुल दुःखी थी.

“क्या तुम बार-बार गाकर थक गई हो?” सम्राट ने पूछा.

बुलबुल गाती रही.

“अगर तुम थक चुकी हो तो तुम्हें गाना नहीं चाहिये,” सम्राट ने पक्षी से कहा. “हम चाहते हैं कि तुम सदा खुश रहो.”

बुलबुल गाती रही.

“तुम मेरी प्रिय मित्र हो,” सम्राट ने कहा.

रात के समय सम्राट बुलबुल को अपने कक्ष में रखते थे. वहाँ सोने का पिंजरा न था, पहनने को गहने और रिबन न थे. बुलबुल अपने सामान्य रूप में होती. वह सम्राट के पलंग के पाये पर बैठती और सिर्फ सम्राट के लिये गाती.

“पूरे चीन में तुम सब से सुंदर जीव हो,” सम्राट ने कहा. “सोने के गहने और रिबन पहन कर तुम अच्छी लगती हो. लेकिन वह चीज़ें तुम्हारी सुंदरता नहीं बढ़ा सकतीं. जब तुम अपने असली रूप में होती हो तब तुम सबसे सुंदर लगती हो. और जब तुम गाती हो तो तुम अपने असली रूप में होती हो.”

बुलबुल ने सम्राट के लिये एक अनोखा गीत गाया. सम्राट को असीम प्रसन्नता हुई. वह सपनों की दुनिया में खो गये.
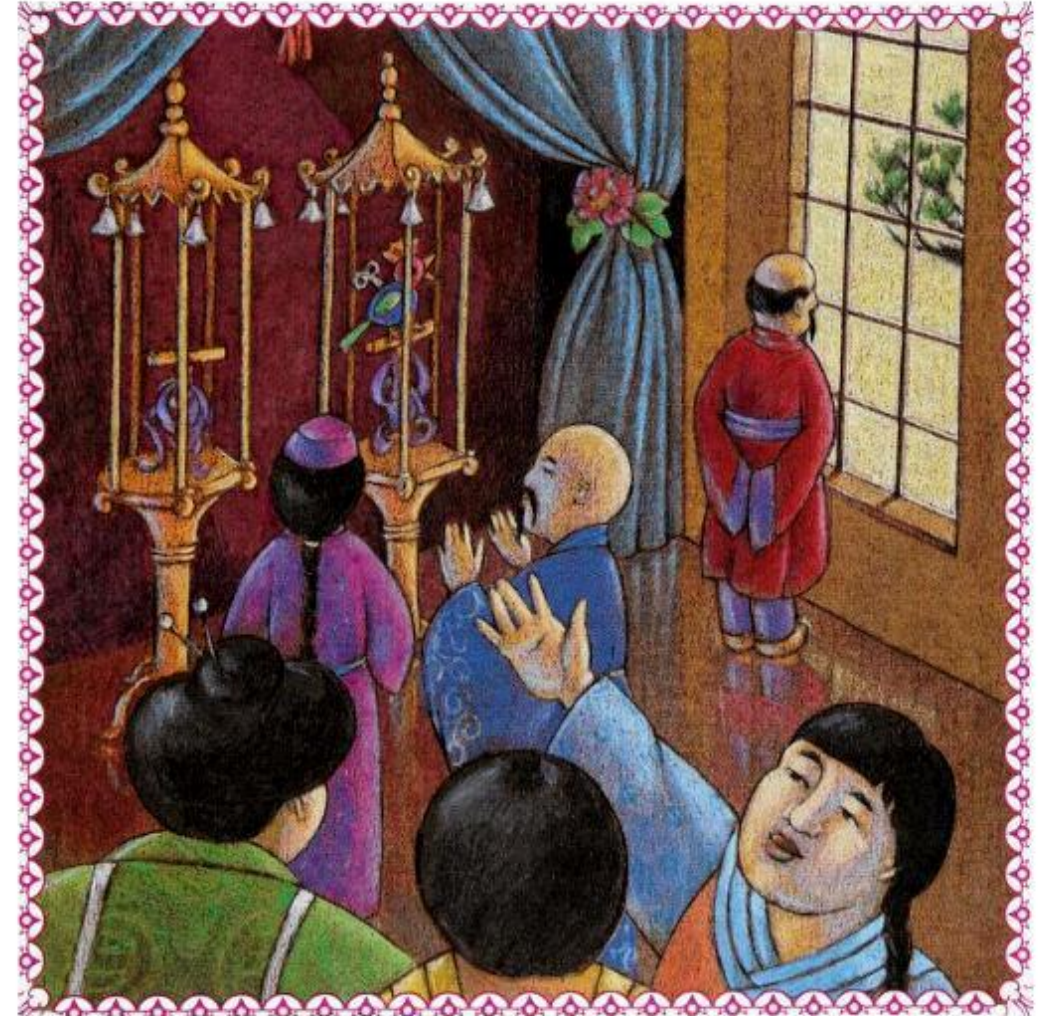
सम्राट के लिये एक उपहार आया. इसे जापान के सम्राट ने भेजा था. उपहार के साथ एक संदेश भी था.

“हमें आशा है कि हमारा उपहार आपको अच्छा लगेगा,” संदेश में लिखा था, “आपने हमें बहुत सुंदर उपहार दिया था. बुलबुल ने हमें बहुत खुशी दी थी. अपना आभार व्यक्त करने के लिये यह तुच्छ भेंट भेज रहे हैं.”

चीन के सम्राट ने उपहार खोला.

भीतर एक खिलौना था-एक छोटा-सा पक्षी. उस पर चमकीले रंग किये हुए थे. पक्षी पर बहुमूल्य रत्न, मोती और हीरे जड़े हुये थे. खिलौने के पिछली तरफ चाँदी की चाभी लगी थी.

सम्राट ने चाभी घुमाई. एक गीत बजने लगा. यह गीत असली बुलबुल के गीत जितना सुंदर न था. लेकिन खिलौना देखने में बहुत सुंदर था और महल में आने वाले लोगों को खुशी दे सकता था.

सम्राट ने सोने के दूसरे पिंजरे के लिये आदेश दिया. खिलौने को उसमें रखा दिया. फिर उन्होंने चाभी घुमाई.

“अब तुम कुछ आराम कर पाओगी,” सम्राट ने बुलबुल से कहा.

दर्शक उस खिलौने को देख कर बहुत खुश हुए.

“आखिरकार,” लोगों ने कहा, “एक ऐसी बुलबुल जो उतनी ही सुंदर दिखती है जितना सुंदर वह गाती है.”

खिलौने की आवाज़ उतनी मधुर न थी जितनी बुलबुल की थी. लेकिन किसी को इस बात की परवाह न थी. लोग खिलौने को बार-बार चलाने के लिये कहते.

बुलबुल अब गाती न थी. वह उड़ कर जंगल में अपने घर चली गई.

किसी ने ध्यान ही न दिया कि बुलबुल जा चुकी थी.

किसी ने नहीं, सिवाय सम्राट के. वह अपने मित्र की कमी को महसूस करते थे.

सम्राट बुलबुल का मधुर गीत सुनने को व्याकुल थे.

“हम जानते हैं कि हमारी मित्र को जंगल अच्छा लगता है,” उन्होंने कहा, “उसके लिये यही अच्छा है. हमारी यही कामना है कि वह प्रसन्न हो.”

सम्राट के मेहमान भी प्रसन्न थे. उन्हें खिलौने का गीत पसंद था. उन्हें यह बात खासकर पसंद थी कि वह बहुत सुंदर दिखता था.

“इसकी चाभी फिर से घुमाओ!” वह कहते.

सम्राट के सेवक बार-बार खिलौने की चाभी घुमाते. वह सारा दिन चलता. वह हर दिन चलता. वह रात में भी चलता.

लेकिन एक सुबह खिलौने के अंदर कुछ टूट गया. ज़ोर की एक टंकार हुई. खिलौने ने चलना बंद कर दिया.

सम्राट ने खिलौने को हिलाया. मुख्यमंत्री ने चाभी घुमाई. सब उत्सुकता से देख रहे थे. लेकिन खिलौना नहीं चला.

वह टूट गया था.

सम्राट के घड़ीसाज़ को महल में बुलाया गया. उसने खिलौने को खोल दिया. उसे पता लग गया कि क्या खराबी थी.

“एक स्प्रिंग खुल गया है,” घड़ीसाज़ ने कहा. “खिलौना टूट गया है.”

“क्या तुम इसे ठीक कर सकते हो?” सम्राट ने पूछा.

“बेशक,” घड़ीसाज़ ने कहा.

“क्या इसमें बहुत समय लगेगा?” मुख्यमंत्री ने पूछा.

“नहीं, अधिक समय न लगेगा,” घड़ीसाज़ ने कहा, “लेकिन अब इसका ध्यान रखना पड़ेगा. सिर्फ विशेष अवसरों पर ही इसे चाभी देनी होगी.”
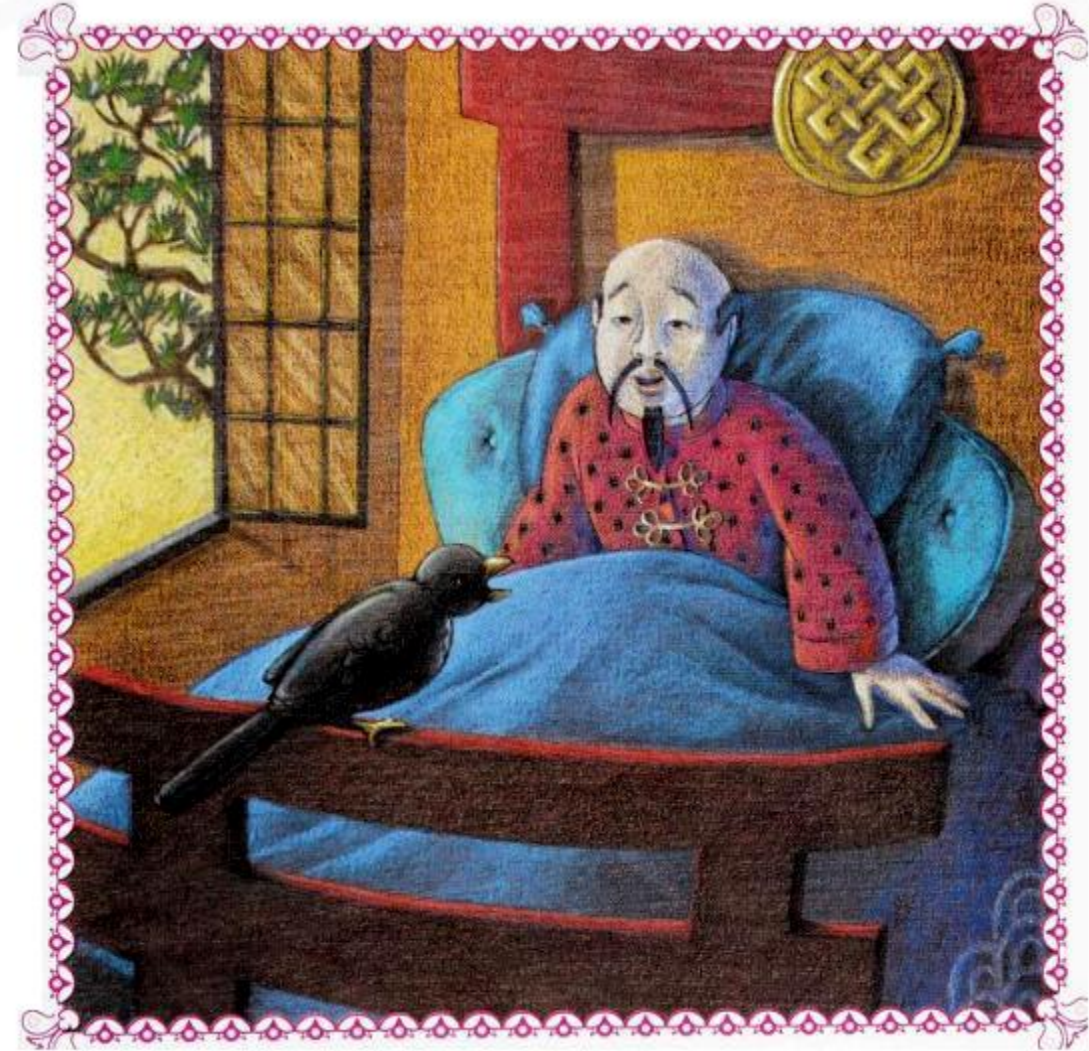
मित्रता की कहानी

उस दिन के बाद से महल में उदासी छा गई. वहाँ कोई प्रसन्नता न थी. कोई दर्शक न आता था. सम्राट भी अकेले और उदास रहते थे.

उन्हें अपनी मित्र बुलबुल की कमी महसूस होती थी. उसके मधुर गीत और उसकी संगत की कमी उन्हें खलती थी.

सम्राट बीमार और कमज़ोर हो गये. वह अपने बिस्तर में ही लेटे रहते.

सैनिक उन्हें उत्साहित न कर पाये. सेवक उन्हें तसल्ली न दे पाये. एक अद्भुत फूल देकर भी माली प्रसन्न न कर पाये. कोई भी सम्राट की सहायता न कर पाया.

कोई भी, सिवाय मुख्य माली के. वह जानता था कि बुलबुल ही कुछ कर सकती थी. वह बुलबुल के पास गया.

"तुम्हारा मित्र बीमार है," उसने बुलबुल से कहा. "तुम्हें उनके पास जाकर उन्हें देखना चाहिये."

बुलबुल उड़ कर सम्राट के कमरे की खिड़की के पास आ गई. सम्राट ने अपनी आँखें मलीं. बहुत दिनों के बाद वह पहली बार मुस्कराये.

"तुम लौट आई!" उन्होंने कहा.

बुलबुल ने मुंह खोला. सम्राट के लिये उसने एक नया गीत गाया. सम्राट की आँखों से खुशी के आँसू बहने लगे. इतना मधुर गीत उन्होंने आज तक न सुना था.

वह अपने बिस्तर में बैठ गये. उनका चेहरा प्रसन्नता से खिल उठा. अपने मित्र को फिर से देखकर वह बहुत खुश थे. वह जान गये थे कि बुलबुल के मधुर और निराले गीत अब वह फिर से कई बार सुन पायेंगे.

समाप्त